Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

अगस्त 2022 (द्वितीय)

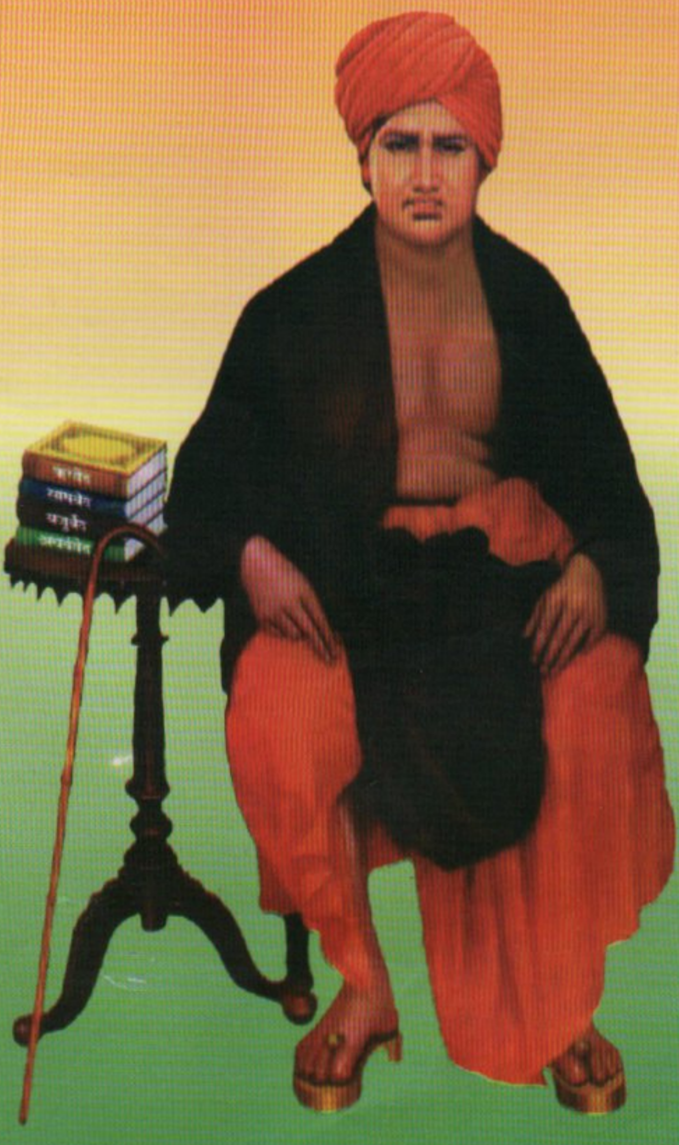

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,123
विक्रम संवत् 2079
दयानन्दाब्द 199

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 18 अंक 14

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क
देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये
विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

अगस्त, 2022 (द्वितीय)
16 से 30 अगस्त, 2022 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय—वेद-प्रवचन 2
2. आर्यसमाज की दृष्टि में योगेश्वर श्रीकृष्ण 4
3. अद्वितीय महापुरुष योगेश्वर श्रीकृष्ण का जीवन आदर्श व अनुकरणीय है 6
4. यह भी सदाचार है 8
5. ओहो! वह समर्पण भाव (2) 9
6. स्वास्थ्य चर्चा-छोटे-छोटे पत्तों में बड़े-बड़े गुण 12
7. कविता—आर्यरत्न ठाकुर विक्रमसिंह आर्य 13
8. समाचार-प्रभाग 14
9. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 16

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं। —सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन—उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

गतांक से आगे....

आगे कहा (अस्नाविरम्)। शरीरधारी के साथ नस-नाड़ियों का होना भी स्वत: सिद्ध है। शरीर केवल ऊपरी खोल का नाम नहीं। काया एक जटिल वस्तु है, उसमें अत्यन्त बारीक तारों का जाल-सा बिछा हुआ है जो एक-दूसरे की क्रिया को रोकता है। पैर उठाइए, ऐसा प्रतीत होगा कि कोई दूसरा भाग उसे आगे चलने से रोकता है। शारीरिक अंगों को मर्यादा में रखने का यही अर्थ है कि एक-दूसरे को सीमित परिधि के बाहर न जाने दें। यदि ईश्वर के शरीर होता तो नस-नाड़ियाँ भी होतीं और नस-नाड़ियाँ होतीं तो सर्वव्यापक कैसे होता? सर्वव्यापक न होता तो हम जैसा पराधीन होता, अत: कई लगभग पर्यायवाची शब्दों द्वारा सचेत कर दिया कि जहाँ या जिस वस्तु में काया-सम्बन्धी सीमाओं का लवलेश भी प्रतीत हो उसको ईश्वर समझना अपने को धोखा देना है। यह चेतावनी ईश्वर के उपासकों के लिए आवश्यक थी जिससे कोई धोखेबाज ईश्वर बनकर मूर्खों के भक्तिभाव का अनुचित लाभ न उठा सके।

अब कहा 'ईश्वर शुद्ध है।' अशुद्धि काया से ही उत्पन्न होती है। जहाँ मिलावट होगी वहीं अशुद्धि होगी। जिसमें मिलावट की संभावना हो ही न, वही शुद्ध कहलाया जा सकता है। अशुद्ध वस्तु दूसरे को शुद्ध नहीं कर सकती। जो ईश्वर का उपासक शुद्ध बनना चाहता है वह ईश्वर को शुद्ध मानेगा और जो ईश्वर को शुद्ध समझता है वह अशुद्धता से दूर रहेगा। अंग्रेजों की एक कहावत है कि शुद्धता ईश्वरपन से दूसरे नम्बर की चीज है (Cleanliness is net godliness)।

इसके पश्चात् ईश्वर का एक और गुण बताया, **'अपापविद्धम्'**। पाप उसको बींध नहीं सकता। पाप क्या है? कर्त्तव्य का न करना और अकर्त्तव्य का करना। ऐसे कामों का कारण होता है अविद्या और प्रलोभन। जब हम किसी ऐसी वस्तु को लेना चाहते हैं तो हमारे पास न हो और जो हमको लोभ में फँसा ले तो उस समय हमारी प्रवृत्ति पाप की ओर होती है। धार्मिक गाथाओं में जो देवी-देवताओं की कथाएँ दी हुई हैं, उनमें अज्ञान, लोभ, मोह, दम्भादि से प्रेरित होकर ही देवी-देवताओं ने पाप की ओर अपना झुकाव दिखाया। यूनानियों के ओलम्पिया पर्वत, पुराणों के

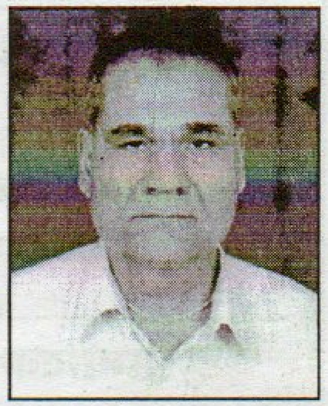

कैलास, गन्धर्वनगर आदि, मुसलमानों के खुदा और शैतान के किस्से, इन सब में ईश्वर को परमशुद्ध मानते हुए भी पाप की कुछ लगावट प्रतीत होती है। कुरान की आयतों में हम बात-बात पर खुदा को क्रोध से झल्लाता और अज़ाब (=आग में जलाना) की धमकियाँ देना पाते हैं। ईश्वर को हर छोटी बात पर इतना क्रोध आता ही क्यों है? क्या क्रोध कोई अच्छी चीज है? **'अपापविद्धम्'** परमात्मा में किसी पाप या दुर्बलता की गुंजायश नहीं।

परमात्मा **कवि** है अर्थात् वह सर्वज्ञ है, सब कुछ जानता है, **'मनीषी'** है अर्थात् संसार का प्रत्येक अंग बड़े सोच-विचार के साथ बनाया गया है और उसकी यथार्थता को समझने के लिए मनुष्य को मनीषी अर्थात् विचारशील होने की आवश्यकता है, ईश्वर के 'मनीषी' गुण को समझना केवल मनुष्य की ही शक्ति में है, अन्य क्षुद्र प्राणियों के नहीं, इसलिए वेद में बार-बार कहा गया है कि ईश्वर को समझने के लिए जगत् की क्रियाओं का भलीभांति अध्ययन करो। हर चीज की उपयोगिता स्वयं ज्ञात हो जाएगी। क्या आप जानना चाहते हैं कि आँखें दो क्यों हैं? मुंह के भीतर कोमल जीभ और कठोर दांत क्यों हैं? मनुष्य का हृदय आँख के पास क्यों नहीं बनाया? ऊँट की गर्दन लम्बी क्यों होती है? बत्तख के शरीर पर से तेल के बिन्दु क्यों प्रकट होते हैं? ये सब बातें ईश्वर के मनीषीपन को सिद्ध करती हैं। क्या इसके भी वर्णन की आवश्यकता थी? थी ही नहीं है, आज भी है। नास्तिकों की पुस्तकों में देखो। सृष्टि की बनावट को कितना त्रुटिपूर्ण बताया जाता है। संस्कृत की

कविता तो प्रसिद्ध ही है—

गन्धं सुवर्णे फलमिक्षुदण्डे नाकारि पुष्पं खलु चन्दनेषु। विद्वान् धनाढ्यो नृपदीर्घजीवी धातुस्तदा कोपि न बुद्धिदोऽभूत्।।[1]

यह बात यदि कवियों के प्रलाप तक ही सीमित रहती तो अधिक चिन्ता की बात न थी, क्योंकि कहावत है कि **'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।'** परन्तु आश्चर्य तो उन बुद्धिमान् वैज्ञानिकों पर है जो अपनी थोड़ी-सी दौड़-धूप को ही विज्ञान की पराकाष्ठा समझ बैठते हैं।

अब दो और गुण बताये-**'परिभू', 'स्वयंभू'**। सब जगत् को चारों ओर से घेरे हुए है, भीतर भी है बाहर भी।

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।

(यजुर्वेद 40.5)

परमात्मा **'स्वयंभू'** है अर्थात् उसका कोई दूसरा उत्पादक नहीं है। नास्तिकों की ओर से यह भी आक्षेप किया जाता है कि यदि सूर्य को बनाने वाला कोई अदृष्ट ईश्वर है तो उस ईश्वर का बनाने वाला भी कोई दूसरा अदृष्ट होगा। इस युक्ति में अन्योन्याश्रय-दोष होगा, अतः ईश्वर की सत्ता तर्क से असिद्ध नहीं होती। नास्तिकों का यह आक्षेप निस्सार है और कारण-कार्यवाद को ठीक-ठीक न समझने के कारण है। वैशेषिक दर्शन के नीचे लिखे सूत्रों पर विचार कीजिए—

सदकारणवन्नित्यम्। 4.1.1

जो नित्य सत् है उसका कोई दूसरा कारण नहीं होता।

कारणभावात्कार्यभावः ।4.1.3

कारण होने से ही कार्य होता है। कोई कार्य बिना कारण के नहीं होता।

कारणभावात् कार्याभावः । 1.2.1

न तु कार्याभावात् कारणाभावः । 1.2.2

इन सूत्रों के दृष्टान्त तो आपको नित्य के दैनिक जीवन में मिल सकते हैं, सब जानते हैं कि मिट्टी से ही घड़ा बनता है। मिट्टी न होती तो घड़ा न बने। मिट्टी उस समय भी हो सकती है जब घड़े का अभाव हो। कार्य का कारण होता है। कारण का कारण नहीं। ईश्वर कारण है कार्य नहीं। जब तक कि ईश्वर का 'कार्यत्व' सिद्ध न हो जाए उसके कारण का प्रश्न उठाना ही भूल है। सूर्य का कार्य होना सिद्ध है, अतः उसके कारण की पूछताछ उपयुक्त है। क्या ईश्वर कार्य की कोटि में आ सकता है? कार्य नाम ही है विकृत वस्तु का। आटे का विकृत रूप ही रोटी है। यदि रोटी विकृत रूप न हो तो यह प्रश्न भी नहीं उठता कि रोटी का उपादान कारण क्या है और उसका कर्त्ता कौन है? सांख्यदर्शन में इस बात को अधिक स्पष्ट किया है—

मूले भूलाभावादमूलं मूलम्। सांख्य॰ 1.67

अर्थात् मूल का मूल नहीं होता। वृक्ष या उसके फल-फूल को देखकर यह प्रश्न उठा सकते हैं कि इस वृक्ष की जड़ कौन-सी है, परन्तु जब जड़ मिल गई तो यह प्रश्न करना मूर्खता होगी कि इस जड़ की जड़ कौन-सी है। इसीलिए परमेश्वर को आर्यसमाज के पहले नियम में 'आदिमूल' कहा गया। 'मूल' कहना भी पर्याप्त था। परन्तु 'आदि' शब्द लगाकर निस्सन्देहता को अधिक बल दे दिया गया। ईश्वर का ईश्वर मानना भी भूल और उसकी खोज करना भी भूल। उसको लौकिक भाषा में इतना ही कह सकते हैं कि वह स्वयंभू (खुदा=खुद+आ) है।

निर्गुण और सगुण दोनों प्रकार की व्याख्या करने के पश्चात् वेद ने ईश्वर के सृष्टि-उत्पादनरूप अत्यन्त विस्तृत कार्य का एक सूक्ष्म और छोटे-से वाक्य में वर्णन किया है। **'याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः'**। 'समा' का अर्थ वर्ष या संवत्सर भी होता है। परन्तु **'शाश्वतीभ्यः'** (सदा रहने वाली, नित्य) इस विशेषण से यहाँ वर्ष का अर्थ ठीक नहीं बैठता। यहाँ 'समा' का अर्थ है ईश्वर की जीवरूप प्रजा। तात्पर्य यह है कि ईश्वर ने सृष्टि रचकर नित्य और अनन्तसंख्यक जीवों के लिए (याथातथ्यतः) ठीक-ठीक उनके कर्मों के अनुसार (व्यदधात्) विधान बना दिया है। हर सरकार (राज) या शासन-संस्था का एक विधान होता है। यह सब विधान मानव-समाज की नैसर्गिक प्रवृत्तियों को देखकर ही बनाये जाते हैं। सब मानव निर्मित विधान उस बड़े ईश्वर-निमित्त विधान की नकल मात्र हैं, असल वही है। जो नकल असल

शेष पृष्ठ 16 पर....

1. परमेश्वर ने सोने में सुगन्ध, ईख में फल, चन्दन के वृक्षों पर फूल नहीं बनाये तथा विद्वज्जनों को धन-सम्पन्न व राजा को बड़ी आयु वाला नहीं बनाया। उस समय कोई भी परमात्मा को बुद्धि देने वाला नहीं था।

आर्यसमाज की दृष्टि में योगेश्वर श्रीकृष्ण

❑ कन्हैयालाल आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

सञ्जय के कथन अनुसार यह सिद्ध होता है कि श्रीकृष्ण और अर्जुन साथ-साथ जिस युद्ध में लड़ेंगे उसमें विजय मिलनी निश्चित है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि श्रीकृष्ण जी और अर्जुन दोनों की महाभारत में भागीदारी थी, यह और बात है कि किसी की अधिक और किसी की कम। अर्जुन जहाँ बहुत बलशाली, पराक्रमी और धनुर्विद्या में अतिनिपुण क्षत्रिय था तो वहीं श्रीकृष्ण जी एक अति बुद्धिमान्, राजनीतिज्ञ, धैर्यवान्, विद्वान् तथा दूरदर्शी क्षत्रिय थे। अर्जुन यदि मानव थे तो श्रीकृष्ण जी महामानव थे। यदि श्रीकृष्ण ईश्वर के अवतार होते तो सञ्जय यह कहता कि पाण्डवों की ओर जब श्रीकृष्ण स्वयं ईश्वर के अवतार हैं तब कौरवों की जीत की संभावना करना ही व्यर्थ है। अर्थात् पाण्डवों की जीत होना निश्चित है? सञ्जय का कथन भी श्रीकृष्ण को अवतार सिद्ध नहीं करता। इससे सिद्ध होता है कि श्रीकृष्ण जी ईश्वर के अवतार नहीं थे।

आर्यसमाज की दृष्टि में श्रीकृष्ण-आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी को महर्षि दयानन्द की दृष्टि से देखता है, महर्षि द्वारा वर्णित आप्तपुरुष के रूप में मानता है। पुराणों द्वारा वर्णित श्रीकृष्ण का स्वरूप तर्क, प्रमाण, बुद्धि, विवेक, विज्ञान और युक्तियों के आधार पर सत्य नहीं है। आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी को ईश्वर का अवतार न मानकर दिव्य गुणों से युक्त महापुरुष के रूप में मानता है। पौराणिक विचारधारा को मानने वाले व्यक्ति कहते हैं कि आर्यसमाजी नास्तिक हैं, क्योंकि वे श्रीकृष्ण जी को नहीं मानते, परन्तु वास्तविकता यह है कि आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी को पुराणपंथियों से अधिक मानता है। हम बड़े गर्व के साथ कह सकते हैं कि आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी को जितना जानता और मानता है, उतना संसार का कोई भी आस्तिक नहीं मानता।

आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी के महाभारत में वर्णित स्वरूप को मानता है। भागवतपुराण के कृष्ण गोपियों के साथ रासलीला रचाने वाले, माखन चुराने वाले, बांसुरी की धुन से गोपियों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले और रसिक प्रवृत्ति के हैं, परन्तु आर्यसमाज के कृष्ण सर्वगुणसम्पन्न, महान् योगिराज, वेद-वेदांग-स्मृति आदि के ज्ञाता, न्यायशास्त्र व राजनीति में पारंगत, आदर्श राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, नीतिनिपुण, राष्ट्रनायक, सदाचारी, न्यायकारी, परोपकारी, सद्गृहस्थी, त्यागी, तपस्वी तथा उच्चकोटि के संयमी हैं।

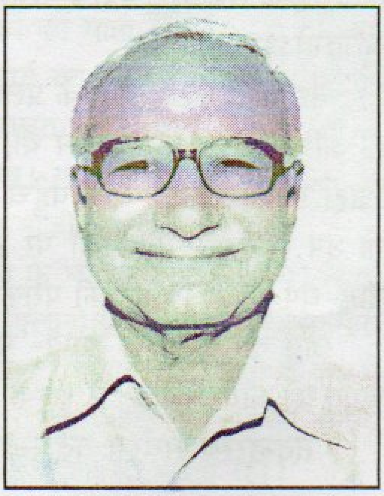

पुराणपन्थी उनके चित्र की पूजा करके, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन रासलीलायें करके, मन्दिरों में उनसे सम्बन्धित सुन्दर-सुन्दर झांकियाँ सजाकर, व्रत रखकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं, परन्तु आर्यसमाज उनके चित्र की पूजा न करके उनके चरित्र की पूजा करता है। आर्यसमाज उनको एक महापुरुष मानकर उनके जीवन के गुणों को अपनाने की शिक्षा देता है।

जिज्ञासा हो सकती है कि श्रीकृष्ण जी जब ईश्वर का अवतार नहीं थे तो उन्हें आर्यसमाजी लोग भी बार-बार भगवान् कृष्ण क्यों कहते हैं? भगवान् शब्द ईश्वर का भी वाचक है और मनुष्य का भी। किसी विद्वान् ने भगवान् शब्द की व्याख्या कहते हुए बताया है—

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसश्श्रियः।
ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा॥

सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन छह गुणों का नाम 'भग' है। जिसके पास ये गुण होते हैं—वह भगवाला अर्थात् 'भगवान्' होता है। अत: श्रीकृष्ण जी को भगवान् संबोधित करने में आश्चर्य ही क्या? परमात्मा भी भगों से परिपूर्ण होने से भगवान् है और मनुश्य भी भगवान् कहला सकता है। इतना अन्तर यहाँ अवश्य जान लेने योग्य है कि इन भगों के साथ-साथ परमात्मा में आनन्द, सर्वव्यापकता व सर्वज्ञता आदि गुण भी विद्यमान रहते हैं, जिनसे वह सृष्टि की उत्पत्ति, पालन, संहार भी करता है,

परन्तु आत्मा में ये गुण नहीं होते। इस कारण कोई भी आत्मा कभी परमात्मा नहीं बन सकता।

सारे विश्व में अनेक महापुरुष हुए हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। सभी महापुरुषों में अपनी-अपनी विशेषताएँ थीं जिसके कारण उन्हें स्मरण किया जाता है, परन्तु श्रीकृष्ण जी वास्तव में अप्रतिम हैं, अनुपम हैं, उनकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। उनके चरित्र के मुख्य गुण निम्नलिखित हैं—

1. **योगेश्वर श्रीकृष्ण**-स्वयं श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन को उपदेश देते हुए गीता के दूसरे अध्याय के 48वें श्लोक में योग का अर्थ बताया है—'**समत्वं योग उच्यते**' इस उक्ति के अनुसार श्रीकृष्ण जी योगी ही नहीं समदर्शी भी थे।

2. **कर्मकुशलता**-योगिराज श्रीकृष्ण जी गीता 2/50 में कहते हैं—'योग: कर्मसु कौशलम्' किसी भी कीर्य को कुशलता पूर्वक, दत्तचित्त होकर करना ही योग है। श्रीकृष्ण जी कर्म को ही विशेष समझते थे तभी तो अर्जुन को कहते हैं—कर्म करना तुम्हारा कर्त्तव्य है, फल की चिन्ता मत करो।

3. **विनम्रता**-युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सभी ने अपने-अपने कार्य बांट लिये, परन्तु श्रीकृष्ण जी ने देखा कि उन्हें कार्य सौंपे जाने के विषय में सब असमंजस में हैं तो उन्होंने नम्रतापूर्वक निवेदन किया—''मुझे सेवा का कार्य सौंपा जाये, मैं सब अतिथियों के चरण धोऊँगा।''

4. **शालीनता और शिष्टता**-श्रीकृष्ण जी महान् राजा होते हुए भी जब भी श्री व्यास जी, धृतराष्ट्र, कुन्ती, युधिष्ठिर, भीम, पितामह, विदुर आदि से मिलते तो उनका चरणस्पर्श करना न भूलते थे।

5. **न्यायप्रिय**-चाहे कौरव अत्यन्त शक्तिशाली थे, परन्तु अन्यायकारी कौरवों का साथ न देकर न्याय पर चलने वाला धर्मात्मा पाण्डवों का साथ दिया।

6. **वीर, स्वाभिमानी, निर्भीक**-शान्ति प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले श्रीकृष्ण जी को दुर्योधन अपमानित करने का प्रयास करता है, वे दुर्योधन को फटकारते हुए उसके भोजन के निमन्त्रण को अस्वीकार करते हैं। स्वयं को कैद करने का प्रयास करने पर श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र को ललकारते हैं और अपने वीर, स्वाभिमानी एवं निर्भीक होने का परिचय देते हैं।

7. **निर्लोभी**-कंस का वध किया, परन्तु राज्य अपने नाना उग्रसेन को दे दिया। जरासंध का वध करके मगध का राज्य उसके पुत्र सहदेव को दे दिया। महाभारत का युद्ध जीतकर हस्तिनापुर का राज्य युधिष्ठिर को दे दिया। उन्होंने लोभरहित होकर अन्याय-अत्याचार को समाप्त किया।

8. **कुशल नीतिनिपुण**-उन्होंने सज्जनों के साथ शिष्टाचार और दुष्टों के साथ 'शठे साठ्यम् समाचरेत्' की भावना को न्यायसंगत माना।

9. **यज्ञप्रिय**-गीता 3/13 में कहा है-सर्वदा सुख चाहने वाले को सदा श्रेष्ठ कर्मों में संलग्न रहना चाहिये। यज्ञ एक श्रेष्ठतम कर्म है। जो यज्ञ के पश्चात् खाता है (यज्ञशेष) अर्थात् अमृत खाता हुआ सब दु:खों से मुक्त हो जाता है।

10. **ओ३म् ही ईश्वर का मुख्य नाम है ऐसा मानना**-गीता 8/14-15 में कहा है, इसी मेरे प्यारे इष्ट 'ओ३म्' को जो भक्त नित्य नियम से जपता है, वह बार-बार जन्म तथा मृत्यु के दु:ख से बचकर परमगति (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

11. **गृहस्थ होते हुए भी योगी**-श्रीकृष्ण जी साधारण गृहस्थ ही नहीं बल्कि एक आदर्श गृहस्थ हैं। आदर्श गृहस्थ के घर में श्रेष्ठ सन्तान, पत्नी धार्मिक, धन की प्रचुरता, यश की प्राप्ति सभी गुण होते हैं। श्रीकृष्ण जी इन सभी गुणों के सागर थे।

12. **आदर्श मित्र**-मित्रता निभाना कोई भी श्रीकृष्ण जी से सीखे। मित्र चाहे निर्धन ही क्यों न हो। सुदामा के आने पर उनका न केवल स्वागत किया अपितु उसको धन-धान्य से सम्पन्न कर दिया।

13. **ईश्वरभक्त**-प्रतिदिन दोनों समय बड़ी श्रद्धा और निष्ठा से सन्ध्या किया करते थे। यहाँ तक कि दूत के रूप में जब श्रीकृष्ण जी हस्तिनापुर जा रहे थे तो रास्ते में सायंकाल के समय रथ रोककर सन्ध्या की, यह महाभारत में आता है।

अवतीर्य रथात् तूर्णां कृत्वा शौचं यथाविधि।
रथमोचनमादिश्च सन्ध्यामुपविवेश स:॥

14. नारी सम्मान की रक्षा प्रथम कर्त्तव्य आदि।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सदैव महापुरुषों के निर्मल एवं उज्ज्वल जीवन-चरित्र को संसार के सामने रखा

शेष पृष्ठ 16 पर....

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी पर्व 18 अगस्त, 2022 पर—
अद्वितीय महापुरुष योगेश्वर श्रीकृष्ण का जीवन आदर्श व अनुकरणीय है

❑ मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, मो० 9412985121

मनुष्य का जन्म आत्मा की उन्नति के लिये होता है। आत्मा की उन्नति में गौण रूप से शारीरिक उन्नति भी सम्मिलित है। यदि शरीर पुष्ट और बलवान न हो तो आत्मा की उन्नति नहीं हो सकती। आत्मा के अन्त:करण में मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार यह चार उपकरण होते हैं। इनकी उन्नति भी आत्मा की उन्नति के लिये आवश्यक है। समस्त वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर निष्कर्ष निकलता है कि वेदज्ञान से मनुष्य ईश्वर, आत्मा व संसार के ज्ञान को प्राप्त होकर तथा तदनुकूल आचरण करने से उसकी शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति होती है। श्रीकृष्ण जी सच्चे वेदानुयायी एवं ईश्वरभक्त थे। वह सर्वव्यापक एवं सर्वज्ञ नहीं थे अपितु माता-पिता से जन्म होने तथा शरीर छोड़ने के कारण वेद सिद्धान्तों के अनुसार उनका एक श्रेष्ठ महापुरुष होना एवं ऋषियों के समान जीवात्मा होना ही निश्चित होता है। श्रीकृष्ण जी का जीवन संसार के सभी लोगों के लिये प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय है। उनके जीवन, कार्यों एवं शिक्षाओं का अध्ययन करने एवं उनके अनुरूप स्वयं को बनाने से मनुष्य जीवन सहित देश व समाज की रक्षा, उन्नति व उत्कर्ष हो सकता है। महाभारत के बाद श्रीकृष्ण जी से मिलते जुलते गुणों वाले कुछ अन्य महापुरुष हुए हैं जिनमें हम आचार्य शंकर, आचार्य चाणक्य एवं ऋषि दयानन्द जी को सम्मिलित कर सकते हैं। यह तीनों महापुरुष भी ईश्वरभक्त, वेदभक्त, योगी तथा आदर्श देशभक्ति व उसके लिये बलिदान की भावना से सराबोर थे। योगेश्वर श्रीकृष्ण जी ने अपने काल में अधर्म, अन्याय तथा अविद्या के विरुद्ध आन्दोलन किया था। आचार्य शंकर ने अपने समय में नास्तिकता को समाप्त करने सहित उसके प्रसार को रोककर वेद व वेदान्त की शिक्षाओं को कुछ वेद विपरीत मान्यताओं सहित स्थापित किया था। आचार्य चाणक्य एवं ऋषि दयानन्द जी ने भी अपने-अपने समय में देश व धर्म रक्षा के महत्त्वपूर्ण कार्यों को किया। वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा व संवर्धन तभी हो सकता है कि जब हम इन सभी महापुरुषों सहित मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा अपने समस्त ऋषियों, मुनियों व वेद एवं धर्म-प्रेमी सत्पुरुषों की बतायी शिक्षाओं एवं सद्गुणों का अनुकरण करें। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमें वेदानुकूल मान्यताओं वा सिद्धान्तों को ही ग्रहण करना है और वेदविरुद्ध मान्यताओं का तिरस्कार करना है, भले ही वह किसी महापुरुष या ऋषि तुल्य किसी व्यक्ति ने ही कही हों।

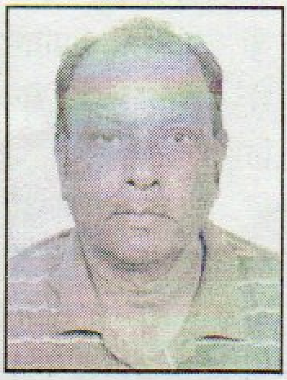

योगेश्वर श्रीकृष्ण जी का बड़ी विषम पारिवारिक एवं देश की राजनैतिक परिस्थितियों में जन्म हुआ था। उनके मामा कंस ने उनके माता-पिता देवकी और वसुदेव जी को अज्ञान के कारण जेल में डाल दिया था। आर्य विद्वान् पं० चमूपति जी इस घटना को महाभारत के विपरीत पाते हैं और अनुमान करते हैं कि यह पुराणकालीन काल्पनिक घटना है। अपनी माता व पिता से उनका लालन व पालन भी न होकर मथुरा से ढाई मील दूर यमुना के दूसरी पार के गांव गोकुल में भाई बलराम एवं बहिन सुभद्रा के साथ हुआ। उनकी शिक्षा वैदिक गुरुकुलीय पद्धति से हुई थी। निर्धन सुदामा आपके सहपाठी एवं मित्र थे। आपकी मित्रता भी इतिहास के पृष्ठों पर अंकित है। श्रीकृष्ण जी द्वारिका के राजा बने थे। उन्होंने अधर्मी राजाओं का विरोध किया था तथा अपने मामा कंस सहित अनेक दुष्ट अधर्मी राजाओं को अपने बुद्धिबल, शक्ति एवं नीतिनिमित्तता के आधार पर अपने मित्रों व सहयोगियों के द्वारा समाप्त किया। महाभारत से पूर्व आर्यावर्त राज्य के उत्तराधिकारी पाण्डव पुत्रों के राज्य में अनेक प्रकार की बाधायें उत्पन्न की गईं। राज्य के लोभ से छल पूर्वक पाण्डवों को द्यूतक्रीड़ा के लिये प्रेरित किया गया था और कौरव पक्ष के धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन ने

उनके समस्त राज्य सहित युधिष्ठिर की पत्नी द्रोपदी पर भी अधिकार कर उसका भरी सभा में अपमान किया था। यदि कृष्ण जी द्यूतक्रीड़ा व द्रोपदी अपमान के अवसर पर आसपास होते तो निश्चय ही वहां पहुंचकर इन कार्यों को कदापि न होने देते। बाद में पता चलने पर वह पाण्डवों से मिले और उन्हें धर्मपालन तथा राज्य की पुनर्प्राप्ति के लिये धर्मपूर्वक प्रयत्न करने में सहयोग किया और प्रतिपक्ष द्वारा धर्म, कर्तव्य व उनके वचनों का पालन न करने पर महाभारत युद्ध की योजना भी पाण्डव पक्ष के साथ मिलकर तैयार की थी। इस युद्ध में अनेक राज्यों के राजा व उनकी सेनाओं ने भाग लिया था। दोनों ओर बड़े-बड़े वीर योद्धा थे। कृष्ण और पांच पाण्डवों को छोड़कर अधिकांश योद्धा इस महायुद्ध में काल के गाल में समा गये थे। पाण्डव, उनके मित्र व अर्जुन के सारथी कृष्ण का पक्ष सत्य व धर्म पर आधारित था जिसकी अन्त में विजय हुई। पाण्डवों की इस विजय में श्रीकृष्ण जी का प्रमुख योगदान था। यदि वह न होते तो न युद्ध होता, न ही धर्म की जय होती। ऐसी स्थिति में इतिहास कुछ और होता जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। अधर्म का विरोध और धर्म के पक्ष में सहयोग करने की शिक्षा हमें श्रीकृष्ण जी की महाभारत में भूमिका से मिलती है। हमें भी जीवन में अधर्म छोड़कर धर्म पर ही अडिग व अकम्पायमान रहना चाहिये। ऐसा होने पर ही वर्तमान एवं भविष्य में वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हो सकती है।

श्रीकृष्ण जी ईश्वरभक्त, वेदभक्त, योगी एवं ब्रह्मचर्य व्रत के आदर्श पालक थे। श्रीकृष्ण जी ने विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी जी से पूर्ण युवावस्था में विवाह किया था। विवाह के बाद दोनों पति-पत्नी में संवाद हुआ कि विवाह का अर्थ क्या है। विवाह सन्तान के लिये किया जाता है। इस पर सहमति होने पर श्रीकृष्ण जी ने रुक्मणी जी से पूछा कि तुम कैसी सन्तान चाहती हो? इसका उत्तर मिला कि श्रीकृष्ण जी जैसी सन्तान चाहिये। इस पर श्रीकृष्ण ने रुक्मणी जी को उनके साथ रहकर तपश्चर्या एवं ब्रह्मचर्यपूर्वक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा की जिस पर दोनों सहमत हुए। इसके बाद श्रीकृष्ण एवं माता रुक्मणी जी ने उत्तराखण्ड के वनों व पर्वतों में 12 वर्ष रहकर ब्रह्मचर्य पूर्वक जीवन व्यतीत किया। अवधि पूरी होने पर उन्होंने प्रद्युम्न नाम के पुत्र को प्राप्त किया। महाभारत में लिखा है कि जब प्रद्युम्न सायं अपने पिता कृष्ण जी के साथ अपने राजमहल में आते थे तो रुक्मणी जी कृष्ण व प्रद्युम्न दोनों की एक समान आकृति व गुणों की समानता को देखकर कौन उनका पति और कौन पुत्र है, इसे पहचानने में कठिनाई अनुभव करती थी। ब्रह्मचर्य की यह महिमा श्रीकृष्ण जी और माता रुक्मणी ने अपने जीवन में स्थापित की थी। यह ब्रह्मचर्य व्रत भी आर्यों व वैदिक धर्मियों के लिये शिक्षा व प्रेरणा ग्रहण करने के लिए महत्त्वपूर्ण है। यह भी बता दें कि महाभारत युद्ध के समय कृष्ण व अर्जुन लगभग 120 वर्ष की आयु के थे। यह बात महाभारत में लिखी है। आज पूरे विश्व में इस आयु का व्यक्ति मिलना असम्भव है। यह वैदिक धर्म एवं संस्कृति की विशेषता है। इसे श्रीकृष्ण जी के जीवन की विशेषता भी कह सकते हैं। श्रीकृष्ण जी का यदि हम अनुकरण करेंगे तो हममें भी ब्रह्मचर्य के सेवन एवं दीर्घायु प्राप्त होने की सम्भावना बनती है।

कौरव सेना में प्रमुख योद्धाओं में भीष्म पितामह, राजा कर्ण, आचार्य द्रोणाचार्य और दुर्योधन आदि प्रमुख बलवान योद्धा थे। किसी शत्रु द्वारा इन पर विजय पाना कठिन व असम्भव था। यदि श्रीकृष्ण जी द्वारा राजनीति व युद्धनीति का आश्रय न लिया जाता तो यह कार्य असम्भव प्रायः था। अतः देश एवं धर्म की रक्षा के हित में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने पाण्डवों व अर्जुन को उचित व आवश्यक सुझाव दिये और उनसे इनका पालन कराया जिसका परिणाम था कि अविजेय योद्धा भीष्म, द्रोणाचार्य, दुर्योधन और कर्ण आदि पराजित किये जा सके। इस प्रकार से महाभारत युद्ध की विजय का अधिकांश श्रेय श्रीकृष्ण जी को जाता है। युद्ध में विजय प्राप्ति धर्म के साथ नीतिमत्तताा का पालन करने से होती है। यह शिक्षा श्रीकृष्ण जी के जीवन से ज्ञात होती है।

महाभारत युद्ध समाप्त होने के बाद श्रीकृष्ण जी की प्रेरणा से पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ किया। इस यज्ञ में श्री युधिष्ठिर जी को चक्रवर्ती सम्राट् बनाया गया था। इस राजसूय यज्ञ में पूरे विश्व के राजा आये थे और उन्होंने महाराज युधिष्ठिर को वस्तुओं व स्वर्ण आदि के रूप में योग्य भेंटे दी थीं। इतिहास में ऐसा राजसूय यज्ञ इसके बाद

क्रमशः पृष्ठ 16 पर......

यह भी सदाचार है...

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

सदाचार ही परमधर्म है। 'धर्म' से सुख मिलता है। अतः 'सदाचार' से सुख मिलता है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद स्वतः प्रमाण है। वेद और वेदानुकूल ग्रन्थों में वर्णित मर्यादाएं, सदाचार के नियम पालनीय हैं। शास्त्रकारों, नीतिकारों ने सदाचार के नियमों का उल्लेख किया है। मनु महाराज 'सदाचार' की महत्ता समझकर स्पष्ट घोषणा करते हैं कि सर्वलक्षणहीन होने पर भी जो मनुष्य आस्तिक होता है, सत्य के प्रति आस्थावान् होता है सौ वर्ष और अधिक जीता है। सदाचार व्यक्ति लम्बी आयु पाता है। 'आयुर्वेद' आयु का वेद है, आयु का ज्ञान कराने वाला शास्त्र है। अतः 'चरक', 'सुश्रुत' में भी सदाचार के नियमों का वर्णन मिलता है। यहाँ 'अष्टांगहृदय' में वर्णित कुछ 'सद्वृत्त' का उल्लेख करते हैं।

धर्म

'आयुर्वेद' में व्यक्ति के 'आस्तिक' होने का सन्देश मिलता है, इसी प्रकार 'अनार्य' के संग का निषेध है। 'धर्म' की महत्ता के बारे में 'अष्टांगहृदय' में स्पष्ट लिखा है—

सुखार्थाः सर्वभूतानां मताः सर्वा प्रवृत्तयः।
सुखं च न विना धर्मात्तस्माद्धर्मपरो भवेत्॥

सुख चाहने के कारण सभी प्राणियों की प्रवृत्ति सुख पाने के लिए होती है। सुख प्राप्ति धर्म के बिना नहीं होती। अतः सभी को धर्म-कार्य करने में तत्पर रहना चाहिए।

यदि आप देखेंगे तो शराब आदि दुर्व्यसनों में फंसा व्यक्ति उनमें सुख मानता है, लेकिन उसकी यह मान्यता उसे दुःख में ले जाती है, इसी प्रकार अन्धश्रद्धा, पाखण्ड में फंसा-धंसा व्यक्ति भी आध्यात्मिक सुख नही पा सकता। अतः 'धर्म' का ज्ञान होना आवश्यक है। जिन ग्रन्थों में वेदविरुद्ध बातें हैं, वे 'धर्म' से बाह्य हैं।

उदारता व सहनशीलता

'धर्मक्षेत्र' में आपको अनेक व्यक्ति ऐसे देखने को मिलेंगे जो मन-वचन-कर्म द्वारा दूसरे का 'अपकार' करते घूमते हैं। जो व्यक्ति इनकी स्पर्धा का नहीं होता, इनसे भिन्न कर्म, योग्यता का होता है, उससे भी ये द्वेष रखते हैं, सदैव निन्दा में लगे रहते हैं। सदाचारी व्यक्ति को तो आयुर्वेद के इस ग्रन्थ में '**उपकारप्रधानः**' कहा गया है। वह सदा उपकार करने वाला होता है।

आज समाज की स्थिति देखोगे तो स्वार्थ, कृतघ्नता चरम पर है। ऐसा समय किसी के लिए अच्छा नहीं होता। '**विनाशकाले विपरीतबुद्धिः**'। यही वह समय होता है कि एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य रखने वाले भी स्वार्थसिद्धि के लिये एक होते हैं, केवल दूसरे की हानि के लिए। लेकिन इतिहास बताता है कि व्यवस्थाओं व स्वयं की हानि के

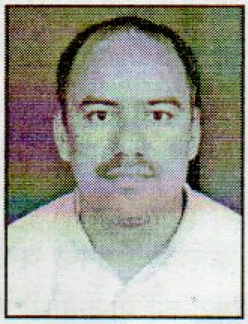

सिवाय इससे कुछ प्राप्त नहीं होता। इस सबसे बचने के लिए कैसा स्वभाव हो। 'अष्टांगहृदय' में आता है—

न कश्चिदात्मनः शत्रुं नात्मानं कस्यचिद्रिपुम्।
प्रकाशयेन्नापमानं न च निःस्नेहतां प्रभोः॥

न अपने को किसी का शत्रु और न दूसरे को अपना शत्रु बतलाये। किसी ने अपना अपमान किया हो, उसका तथा अपने स्वामी, राजा आदि की अपने प्रति स्नेहहीनता का ही वर्णन किसी से न करें।

अतः हर दशा में निन्दा करने की वृत्ति को दबाना चाहिए। उनके बारे में क्या कहें, जो गुणों में भी दोष निकालते घूमते हैं? यही 'सद्वृत्त' में स्पष्ट संकेत मिलता है 'अतिनिपुण' का भी संग न करें। यहाँ उस व्यक्ति की ओर संकेत है जो धर्म में पुरुषार्थ कुछ नहीं करता केवल योजनाएं ही बनाता रहता है।

अन्त में ग्रन्थकार का सन्देश है—

नक्तं दिनानि मे यान्ति कथम्भूतस्य सम्प्रति।
दुःखभाङ्न भवत्येवं नित्यं सन्निहितस्मृतिः॥

आज-कल मेरे रात-दिन कैसे बीत रहे हैं, मैं कैसा होता जा रहा हूँ? इस प्रकार का प्रतिदिन ध्यानपूर्वक विचार करने वाला पुरुष कभी दुःखी नहीं होता है।

आपका आशीर्वाद मेरा सम्बल

आप सब के आशीर्वाद से मैं आने वाले समय में 'आयुर्वेद' का भी कोई वैधानिक प्रमाण-पत्र प्राप्त करने में सफल हो जाऊंगा। अपने पूज्य पिताजी डॉ० प्रतापसिंह 'कुण्डु' का तो मैं सदैव कृतज्ञ रहता हूँ, जिनसे मिले संस्कारों के कारण सत्य शास्त्र मुझे सरल व परिचित से लगते हैं व सामर्थ्यानुसार उनका अध्ययन आत्मिक आनन्द देता है। 'आर्यसमाज' में वृद्धजनों का विशेषकर जो आशीर्वाद व स्नेह मिला है, वह बना रहे। यही प्रभु से प्रार्थना है।

ओहो ! वह समर्पण भाव (2)

❑ राजेश आर्य, गांव आट्टा, जिला पानीपत मो० 9991291318

प्रिय पाठकवृन्द! परिवार, समाज व राष्ट्र के लिए सबसे अधिक हानिकारक कोई होता है, तो वह होता है स्वार्थी व्यक्ति। क्योंकि **'स्वार्थी दोषं न पश्यति'** (स्वार्थ में अन्धा हुआ व्यक्ति दोष नहीं देखता)। यह स्वार्थी विद्वान्, बलवान्, धनवान् आदि कुछ भी हो सकता है। निश्चित रूप से वे विद्वान् ही रहे होंगे, जिन्होंने मांसाहार के लालच में वैदिक ऋषियों को मांसाहारी बताकर यज्ञों में पशु-बलि का प्रचलन किया। अपनी वासना पूर्ति के लिए प्राचीन ऋषियों को दुराचारी प्रचारित करते हुए पुराणग्रन्थ लिखे। सदाचारी कृष्ण को परस्त्रियों से रंगरलियां मनाने वाला लिखने वाले भी कोई अनपढ़ तो नहीं थे। अंग्रेजों ने जिस मैक्समूलर से आर्यों की विदेशी आक्रमणकारी प्रचारित करवाया, वह भी जर्मनी का प्रोफेसर था और स्वतन्त्र भारत में जिन्होंने इस भ्रामक विचार को जारी रखा वे भी विद्वान् थे, सत्य को जानते थे। पर जब स्वार्थ (धन व पद का लोभ) आया, तो आत्मा के प्रतिकूल आचरण करने लगे। ऋषि दयानन्द के आद्यपट्ट शिष्य कहलाने में गौरव का अनुभव करने वाले महान् विद्वान् पण्डित भीमसेन शर्मा का आचरण भी कुछ ऐसा ही रहा।

डॉ० भवानीलाल भारतीय के अनुसार पं० भीमसेन शर्मा हिन्दी-संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित व ऋषि दयानन्द के वेतनभोगी शिष्य थे। ऋषि दयानन्द का पुस्तकें लिखने, छापने आदि का बहुत-सा काम ये देखते थे। वैदिक मत की पुष्टि व वैदिक मत विरुद्ध मन्तव्यों के खण्डन में इन्होंने खूब लिखा। नौ उपनिषदों का भाष्य, मनुस्मृति व गीता की संस्कृत टीका, कतिपय गृहसूत्रों की टीका, व्याकरण के ग्रन्थ, कर्मकाण्ड के प्रतिपादक ग्रन्थ व कुछ खण्डनात्मक ग्रन्थ भी लिखे थे। यद्यपि महर्षि दयानन्द इनके कार्य से पूर्ण सन्तुष्ट नहीं थे। उन्होंने अपने पत्रों में पं० भीमसेन को अज्ञानी, प्रमादी तथा कर्त्तव्यपालन में अक्षम लिखा है, तथापि काम चलाने के लिए इन्हें रख रहे थे।

महर्षि की मृत्यु के लगभग दस वर्ष बाद जोधपुर के महाराजा प्रतापसिंह ने पं० भीमसेन शर्मा को कुछ लालच (1000 रुपये दक्षिणा का लालच) दिया, तो वे शास्त्रों में हिंसक पशुओं का वध कर उनका मांसभक्षण का विधान कर बैठे। जबकि पंडित गंगाप्रसाद एम.ए. को यह लालच धर्म से न डिगा सका। पंडित लेखराम ने पंडित भीमसेन का फटकारा तो बात सीध में आई। पं० भीमसेन ने महाराजा को स्पष्ट कह दिया कि मांस भक्षण पाप है, हानिकारक पशुओं का मांस भी अभक्ष्य है। बस इसी बात पर दक्षिणा आधी (500 रुपये) मिली।

पंडित लेखराम तो 6 मार्च 1877 को मतान्ध हत्यारे के छुरे की भेंट चढ़ गये। कुछ समय बाद पण्डित भीमसेन पुनः स्वार्थ (लोभ) के वशीभूत हो गये। चुरु (राजस्थान) के सेठ माधव प्रसाद खेमका ने उनसे ज्योतिष्टोम यज्ञ करवाया। मोटी दक्षिणा के लालच में आकर पण्डित भीमसेन इस यज्ञ में कुछ ऐसी अवैदिक विधियां कराने के लिए तत्पर हो गये, जिनका आर्य सिद्धान्तों में सख्त विरोध था। ऋषि दयानन्द सूत्र ग्रन्थों में मिलने वाले पशु-हिंसा विषयक विधान को अवैदिक व त्याज्य मानते थे। पंडित भीमसेन ने इस यज्ञ में आटे की पिष्टी (पीठी) से बनाये भेंड तथा मेंढा का प्रतीकात्मक बलिदान किया। इन्हें काठ की तलवार से काटा। पंडित भीमसेन के इस अवैदिक आचरण की निन्दा हुई और इन्हें स्पष्टीकरण करने के लिए कहा गया।

अपनी भूल मानना तो दूर रहा, वे अपनी बात पर अड़ गये। धीरे-धीरे अनेक अवैदिक मन्तव्यों, जन्मना वर्णव्यवस्था, मृतकश्राद्ध आदि का समर्थन करने लगे। महात्मा मुंशीराम ने उनका विरोध किया और उन्हें शास्त्रार्थ की चुनौती दी। 1901 ई० में दिल्ली में तुलसीराम स्वामी ने पंडित भीमसेन के साथ शास्त्रार्थ किया और उनके इस दावे का युक्तिपूर्वक खण्डन किया कि मृतक श्राद्ध का वेदों में विधान है। पंडित तुलसीराम ऐसे ऋषिभक्त थे कि देवनागरी स्कूल मेरठ में संस्कृत अध्यापन करते समय इन्होंने सनातन धर्म सभा के तत्त्वावधान में पौराणिक मान्यताओं का प्रचार करने वाले प्रसिद्ध साहित्यकार पंडित अम्बिकादत्त व्यास की युक्तियों का प्रमाण पूर्वक खण्डन किया था। देवनागरी विद्यालय के

मैनेजर ने जब उनसे आर्यसमाज में जाने का निषेध किया, तो वे सेवामुक्त होकर स्वतन्त्र रूप से वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न हो गये। अपने जीवन में इन्होंने सैकड़ों शास्त्रार्थ किये। 1893 में पण्डित भीमसेन शर्मा ने इन्हें अपने प्रयाग स्थित सरस्वती यंत्रालय के मैनेजर पद पर नियुक्त किया। ये उनके सहयोगी बनकर 'आर्यसिद्धान्त' में लेख लिखने लगे, पर जब यही पंडित भीमसेन वैदिक सिद्धान्तों से डिगने लगे, तो उन्हें शास्त्रार्थ के लिए भी ललकारा। आगरा में (1901 ई०) भी तुलसीराम स्वामी व पंडित कृपाराम ने उनसे शास्त्रार्थ किया। इसमें भी पंडित भीमसेन ने पौराणिक मान्यताओं का समर्थन किया और आर्यसमाज से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया। पं० कृपाराम ने उन्हें ललकारते हुए कहा—''तुम जहाँ-जहाँ मृतक श्राद्धा के पक्ष में भाषण देने जाओगे, मैं भी वहीं-वहीं उनके खण्डन में व्याख्यान दूँगा। सत्य के निर्णय के लिए कमर कसकर मैदान में आ जाइये, मैं अपनी दीक्षा लेकर वेशभूषा बदलने को तैयार हूँ।''

आर्यसमाज व वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध लिखते-बोलते पण्डित भीमसेन ने कभी यहाँ तक कह दिया—''मैं आर्यसमाज की ईंट से ईंट बजा दूँगा।'' पण्डित कृपाराम से ये शब्द सहन नहीं हुए। वे भीमसेन को ललकारते हुए बोले—''आर्यसमाज की ईंट से ईंट बजाने से पूर्व तुम अपने रेत के बने भवन की सुधि तो लो। जब तक मेरे प्राणों में प्राण और तन में श्वास है, आर्यसमाज का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। किसी की क्या शक्ति है कि इस ओर वक्रदृष्टि से देख सके।''

पंडित भीमसेन पंडित कृपाराम की तरह स्वामी दर्शनानन्द तो नहीं बन सके, पर उन्होंने अपना वैदिक सिद्धान्त वाला पहला सारा साहित्य पौराणिक रंग में रंग दिया। क्योंकि सनातनी शिविर में मान-सम्मान व मोटी दक्षिणा आदि की सुविधाएँ थीं और सुविधा सिद्धान्त (सत्य) को सिर नहीं उठाने देती। काशी के विद्वान् आचार्य गदाधर ने किसी आर्य के पूछने पर यही तो कहा था कि सत्यार्थप्रकाश में कोई बात गलत नहीं लिखी है, पर मैं यह सार्वजनिक रूप से नहीं कह सकता, क्योंकि फिर मुझे यह बग्घी लेने नहीं आएगी, न उत्तम दक्षिणा मिलेगी। तभी तो कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने लिखा है—

दौरात्म्य ही अब लोक रुचि पर हो रहा है सब कहीं।
हा स्वार्थ! तेरी जय, अरे तू क्या करा सकता नहीं॥

स्वामी दर्शनानन्द के विषय में (1905 ई०) पौराणिक दल में यह समाचार फैला कि वे आर्यसमाज को छोड़कर सनातन धर्म की दीक्षा ले रहे हैं। इसका कारण था कि स्वामी जी का आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व उत्तर प्रदेश सभा से कुछ मतभेद हो गया था और यह प्रायः सभी को विदित भी हो गया था। बस इसी बात से पौराणिक खुशी मना रहे थे। संयोग से स्वामी जी उन्हीं दिनों कहीं सनातन धर्म का उत्सव होता देखकर सुनने के लिए मंच पर जा बैठे।

सनातन धर्म सभा के मंत्री ने अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए घोषणा कर दी कि आज आर्यसमाज के दिग्गज विद्वान् स्वामी दर्शनानन्द जी सनातन धर्म की वेदी पर पधारे हैं। हमें पूर्ण आशा है कि वे आज सनातन धर्म की दीक्षा में पदार्पण करेंगे।

मन्त्री जी का यह कथन सुनकर स्वामी जी ने कुछ समय मांगा और अपनी बात इस प्रकार से आरम्भ की—''भूले हैं वे लोग जो ऋषि दयानन्द की गोदी में पले हुए किसी भी विद्वान् से यह आशा करते हैं कि वह अपने सिद्धान्तों से विचलित हो सकेगा। एक आर्यपुरुष आदि से लेकर अन्त तक आर्य ही रहेगा। उसे अपने सिद्धान्तों से कोई हिला नहीं सकता।''

यह कहकर वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि करते हुए व्याख्यान जारी कर दिया। जब उन्हें व्याख्यान बन्द करने के लिए कहा गया तो बोले—''अभी मेरा समय है'' कहकर उन्होंने अपना भाषण चालू रखा।

आर्यसमाज के इतिहास मर्मज्ञ प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने 'स्वामी दर्शनानन्द' में लिखा है—''सभाओं की कार्यपद्धति व नीति की समालोचना करने के कारण पंजाब के उर्दू साप्ताहिक 'प्रकाश' (महाशय कृष्ण का पत्र) व 'सद्धर्म प्रचारक' में स्वामी जी के विरोध में कई लेख निकले। पंजाब प्रतिनिधि सभा ने आपके लिए अपनी समाजों की वेदी भी बन्द कर दी। आपको तब कई प्रकार के विरोध का सामना करना पड़ा। आप भी निश्चय के बड़े पक्के थे। जैसे भी बन पड़ा, आपने वैदिक धर्म का प्रचार एक दिन के लिए भी बन्द नहीं किया।''

'आर्यवीरों का दर्शन' पुस्तक के लेखक ने बड़ा सुन्दर लिखा है कि ''यदि कोई पेटार्थी स्वार्थी होता तो निश्चय ही वह ऐसे कठोर व्यवहार से, जो आपके साथ किया गया, आर्यसमाज का शत्रु बन जाता। कहा जाता है कि जब स्वामी जी पर आर्यसमाजों के द्वार बन्द किये गये तो स्वामी जी ने कहा था कि तुम मुझ पर प्रचार का द्वार बन्द नहीं कर सकते। मैं आर्यसमाज की शिक्षा व ऋषि दयानन्द का सन्देश बाजारों तथा गलियों में खड़ा होकर मन्दिरों तथा गिरजों में जाकर मनुष्य मात्र तक पहुँचाऊँगा।''

आर्यो! इस निलिप्त संन्यासी के बलिदान की कीमत कोई चुका सकता है क्या? जो परायों से भिड़ता और अपनों से अपमानित होता हुआ भी अंतिम सांस तक आर्यसमाज के लिए जीया। मृत्यु के मात्र छह घण्टे पूर्व भी जो घोषणा कर रहा था—''जिसे शास्त्रार्थ करना हो, अभी कर ले, फिर न कहना कि आर्यसमाज पीछे है।''

ऋषि दयानन्द के 37 व्याख्यान सुने थे स्वामी दर्शनानन्द ने और 37 वर्ष तक आर्यसमाज का कार्य किया। फिर भी यह महान् संन्यासी कहता है कि (मृत्यु के बाद) ऐसे शरीर को जिससे किसी का उपकार न हुआ हो, कुत्तों के सामने डाल दो। क्या इससे बड़ा भी कोई संन्यास (त्याग) होगा? सबसे बड़ी बात तो यह है कि समाजहित के लिए यह व्यक्तिगत मान-सम्मान (अहंभाव) को तिलांजलि दे देते थे। आर्यसमाज सम्भल के वार्षिकोत्सव पर आर्यसमाज के अनुभवहीन युवा अधिकारियों ने स्वामी जी के साथ दुर्व्यवहार किया। स्वामी जी ने उन्हें समझाया, पर वे नहीं माने। स्वामी जी ने कहा—''अच्छा, यदि आप लोग ऐसी ही मनमानी करेंगे, तो मैं अगली बार आपके उत्सव पर नहीं आऊँगा।''

सम्भल में शास्त्रार्थ होते ही रहते थे। अगले वर्ष उत्सव पर मौलवियों ने पता लगा कि कोई शास्त्रार्थ महारथी सम्भल नहीं पहुंच रहा। उन्होंने शास्त्रार्थ का चैलेंज दे दिया। समाज के वृद्ध प्रधान जी ने उन्हीं युवकों से कहा—''तुम्हारी भूल के कारण स्वामी जी तो पधारे नहीं। अब शास्त्रार्थ कौन करेगा? आप लोगों को जाकर स्वामी जी से विनती करनी चाहिए थी। भूल तो आपकी है।''

इधर स्वामी दर्शनानन्द जी ने अपने गुरुकुल के किसी अध्यापक से सम्भल उत्सव के विषय में पूछा, तो वे बोले—''पत्र तो उनका आया था, पर आपने ही तो कहा था कि वे अपनी भूल का सुधार नहीं करते। इसलिए मैं अब वहाँ नहीं जाऊँगा।'' इसलिए आपको पत्र देने का कोई लाभ न था।

स्वामी जी ने कहा—''अरे, सो तो ठीक है, परन्तु प्रश्न किसी के आदर-अनादर या भूल सुधार का नहीं है। प्रश्न है आर्यसमाज की प्रतिष्ठा का। वहाँ शास्त्रार्थ की चुनौती मिल गई तो फिर क्या होगा?'' यह कहा और सम्भल को चल दिए। वहाँ जाकर दरी पर पीछे कम्बल ओढ़े भीड़ में बैठ गये। जब शास्त्रार्थ के लिए किसी मौलवी ने चुनौती दोहरा दी और कहा—''आओ, किसमें दम है शास्त्रार्थ करने का।'' यह सुनकर आर्यसमाज के प्रधान जी सोच में ही थे कि क्या कहें। झट से स्वामी जी पीछे से उठकर आगे आए और कहा—''आइए! आर्यसमाज सत्य-असत्य के निर्णय के लिए शास्त्रार्थ के लिए तैयार है।'' शास्त्रार्थ हुआ और आर्यसमाज की विजय हुई। क्योंकि यहाँ दक्षिणा के लोभ में अवैदिक मान्यताएँ चलाने के लिए अपने गुरु (दयानन्द) से द्रोह करने वाला पण्डित भीमसेन शर्मा नहीं था, न मुकदमे के लिए इकट्ठे हुए समाज के पैसे के लिए ऋषि दयानन्द से झगड़ा कर आर्यसमाज के विरुद्ध विषवमन करने वाला मुंशी इन्द्रमणि था, अपितु यह तो ऋषि दयानन्द की भट्ठी में तपने वाला त्यागी संन्यासी वामी दर्शनानन्द था, जिसने महात्मा मुंशीराम के द्वारा इनके प्रति प्रयोग किये गये कटुवचन की क्षमा मांगने पर पण्डितराज जगन्नाथ का यह श्लोक लिखा था—

अस्मानवेहि कलमानलमाहतानां
येषां प्रचण्डमुसलैरवदातवैव।
स्नेहं विमुच्य सहसा खलताम्प्रयान्ति
ये स्वल्पपीडनवशान्न वयं तिलास्ते॥

अर्थात् आप हमें चावल समझो, जो मूसलों के प्रहार से सफेद (उज्ज्वल) होते जाते हैं। हम वे तिल नहीं हैं, जो थोड़ी मार ससे ही स्नेह (तेल) छोड़कर खल (दुष्ट) बन जावें।

यूँ तो हमारी कीमत बहुत है गुलशन,
कोई ग्राहक मिले तो मुफ्त में बिक जाते हैं।

(क्रमशः)

छोटे-छोटे पत्तों में बड़े-बड़े गुण

पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण के प्रकोप से आज सारा विश्व चिंताग्रस्त है। इसका सीधा त्रस्त हैं। अंग्रेजी दवाओं के सेवन से मनुष्य के स्वास्थ्य पर जो प्रतिकूल असर पड़ रहा है, उसे हम अपनी व्यस्त दिनचर्या में अनदेखी कर जाते हैं। दवाओं का साइड इफेक्ट व्यापक पैमाने पर हो रहा है। एक ओर जहाँ विज्ञान ने आदमी के मृत्युदर को घटाने में सफलता पायी है वहीं मनुष्य नाना प्रकार के रोगों से खुद को घिरा पाता है।

आज ऐसी अनेक दवाएं हैं जो कुछ दिनों के लिए तो बीमारियों को दबा देती है, परन्तु बीमारियों को समाप्त करने में असफल रहती हैं जिस कारण कुछ दूसरी बीमारी हमें धर दबोचती है। हमने प्रकृति से एकदम मुंह मोड़ लिया है। प्रकृति को भूल-सा गए हैं। अगर हम प्रकृति प्रदत्त उपहारों का सहयोग लें तो अनेक बीमारियों को जड़ से उखाड़ फैंकने में सफल रहेंगे बशर्ते कि हम नियमपूर्वक इन उपहारों का सेवन करें।

इस सम्बन्ध में प्रकृति प्रदत्त पेड़-पौधों की पत्तियों में ऐसे गुण समाहित हैं जो अनेक मानवीय बीमारियों को जादू की तरह दूर करने में सक्षम हैं। अत: हम पेड़-पौधों के पत्तियों के गुण को आत्मसात कर विभिन्न रोगों से छुटकारा पा सकते हैं।

नीम के पत्ते-नीम दो प्रकार के होते हैं—मीठा व कडुवा। इसमें कडुवा नीम में ही औषधीय गुण होते हैं। नीम के पत्ते तृष्णा, खांसी, ज्वर, पित्त, कफ, वमन इत्यादि रोगों को दूर करने में रामबाण का काम करता है। नीम के पत्तों को अगर आटे के साथ पुल्टिस बनाकर फोड़ा पर बांधा जाए तो फोड़ा बैठ जाता है। नीम के पत्तों को पीसकर घाव में लगाने से घाव जल्दी भरती है। इसके पत्ते के रस को पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

इसके पत्तियों को पीसकर, छोटी-छोटी टिकया बनाकर छाया में सुखा देने के बाद प्रतिदिन एक टिकिया खाली पेट पानी के साथ सेवन करने से खून साफ होता है और प्राय: सभी प्रकार के चर्मरोग दूर हो जाते हैं। नीम के पत्ते डालकर खौलाए गए जल से कुछ दिनों तक स्नान करने से

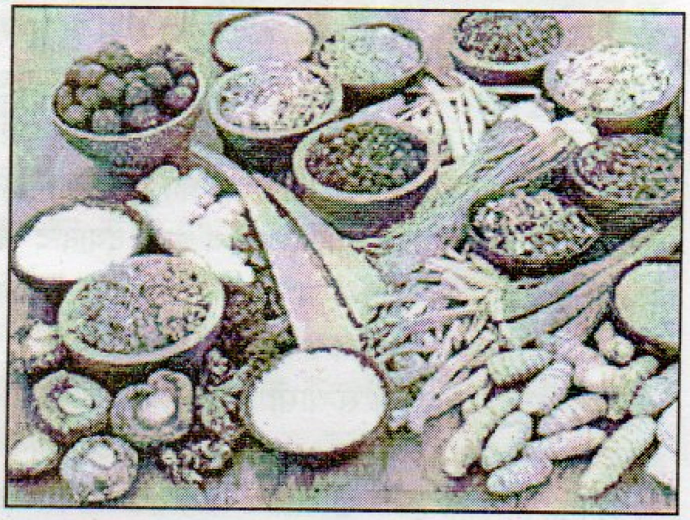

भी चर्मरोग दूर होते हैं। ज्वर होने पर नीम के पत्तों के साथ उतना ही काली मिर्च लेकर आधा किलो पानी में खौलाकर चौथाई शेष रहने पर इस तैयार किये गये औषधि को सुबह-शाम थोड़ा-थोड़ा सेवन करने पर सात दिनों में ज्वर में बिल्कुल निजात पाया जा सकता है।

आजकल लोगों में बाल झड़ने का, असमय सफेद होने का आम शिकायत रहती है। इस कारण नीम हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों की चांदी कट रही है। तेल बनाने वाले, शैम्पू निर्माता आदि इस बाल के बीमारी को दूर करने का वायदा कर दिन-दहाड़े लोगों का जेब हल्का करने में लगे हैं। इससे होता है तो कुछ नहीं पर लोगों को कुछ संतुष्टि जरूर मिल जाती है।

झड़ते बालों को रोकने के लिए अगर हम नीम के पत्तों का सहारा लें तो 100 में 90 प्रतिशत लोग जरूर इसमें सफल रहेंगे। इस उपाय को अपनाना, थोड़ा कठिन तो जरूर है, पर इसे अपनाने से बाल जैसे शारीरिक सुन्दरता को झड़ने से जरूर रोक सकते हैं। इसमें नीम के पत्ते तथा बेर के पत्ते बराबर-बराबर भाग लेकर उसे पानी में खौलाकर बाल को धोने से बाल झड़ना निश्चित रुक जाता है। बाल जब तक झड़ना बन्द न हो, तब तक साबुन या सैम्पू का प्रयोग नहीं करना चाहिए। बाल झड़ने की बीमारी यदि नई है तो एक-डेढ़ सप्ताहों में ही बाल झड़ना बन्द हो जाता है।

तुलसी की पत्ती-कहते हैं, जिस घर में तुलसी का पौधा हो, वहाँ बीमारियों का प्रकोप नहीं होता। तुलसी

वातावरण को शुद्ध रखता है। तुलसी हृदय के लिए हितकर, पित्त, रक्त विकार पसलियों की दर्द व कफ में अच्छा प्रभाव दिखाता है। तुलसी पत्ती व पुनर्नवा की जड़ को साथ में पीसकर पीने से पीलिया जैसी बीमारी से छुटकारा पाया जा सकता है। खांसी या कफ रहने पर तुलसी पत्ती का रस और मधु को साथ मिलाकर चाटने से कफ व खांसी से मुक्ति मिल जाती है। जुकाम होने पर तुलसी की पत्ती व अदरक को पानी में उबाल कर इस्तेमाल किया जा सकता है। अगर चेहरे पर दाग, धब्बे या छांई पड़ जाये तो तुलसी पत्ती का नींबू रस मिलाकर चहरे पर लगाकर कुछ घण्टों के बाद धो देने से कुछ दिनों में छांई चेहरे से गायब हो जाती हैं।

आज-कल शहरों में मच्छरों का प्रकोप दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। इन मच्छरों से मुक्ति दिलाने वाले अनेक प्रकार की अगरबत्ती बाजारों में बिकती हैं। इन अगरबत्तियों को बनाने वाली कंपनियां तुलसी के पत्तों का प्रयोग अगरबत्ती बनाने में करते हैं। अगर हमारे घर में तुलसी का पौधा हो तो इसके सूखे पत्तियों को जलाकर मच्छरों के प्रकोप से बचा जा सकता है।

केले के पत्ते-बिहार में समस्तीपुर जिले के मशहूर चिकित्सक डॉ. आर.पी. मिश्रा समस्तीपुर के मोहनपुर नामक ग्राम की एक औरत, विनय किशोर प्रसाद जी की पत्नी की बीमारी (चर्मरोग) का चिकित्सा करते थक गए। अंत में उन्होंने कह दिया यह बीमारी मृत्यु के साथ जाएगा। इसी तरह पटना में घटना घटी।

हुआ यह कि चर्मरोग से ग्रसित एक औरत जो पटना के गर्दनीबाग की रहने वाली हैं, उनकी हाथों में ऐसा जख्म (चर्मरोग) हो गया था जिसका इलाज पटना मेडिकल कॉलेज हॉस्पीटल के साथ अन्य कई अस्पतालों व नामी चिकित्सकों से करवाई गई, परन्तु सभी असफल रहे। इसी दरम्यान एक बुजुर्ग ने केले के पत्तों को जलाकर उसके बारीक राख को नारियल तैल के साथ चर्मरोग वाले स्थान पर लगाने का सलाह दिया। वैसा ही किया गया, परिणाम आश्चर्य जनक रहा। जिस चर्मरोग से पानीरिसता था, डॉक्टरों ने जवाब दे दिया, खून का परीक्षण करवाया गया। वे सभी कुछ ही दिनों में गायब हो गए। (आर्य जीवन-साभार)

महान् ईश्वरभक्त, धर्मात्मा, सच्चा वेदप्रचारक, महादानवीर आर्यरत्न ठाकुर विक्रमसिंह आर्य

दुनिया वालो! सच कहता हूँ, सुन लो, सभी खोलकर कान।
स्वामी दयानन्द योगी सा, हुआ नहीं जग में विद्वान्।
जिसने विष पी-पीकर जग में, निर्भय किया वेदप्रचार।
दानव दल का खौंफ न खाया, जीवन में ना मानी हार॥ 1॥
पंडित लेखराम अरु स्वामी श्रद्धानन्द गुणों की खान।
हंसराज, गुरुदत्त, लाजपत, ऋषिवर के ये शिष्य महान्।
स्वामी दर्शनानन्द, मास्टर आत्माराम वीर बलवान।
नारायण स्वामी, तुलसी ने, ऊँची की भारत की शान॥ 2॥
बंसीलाल नरेन्द्र हैदराबादी, थे भारत के वीर।
स्वामी सोमानन्द सरस्वती, राम प्रसाद महारणधीर।
लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नन्दकिशोर वीर बलवान।
देश-धर्म पर मिटे बहादुर, ऊँची की भारत की शान॥ 3॥
ऐसे वीर सपूतों में से, ठाकुर विक्रम सिंह गुणवान।
सच्चा वेद प्रचारक जिसके, दुनिया गाती है गुणगान।
महाशय श्री लटूरसिंह का, विक्रमसिंह है प्यारा लाल।
दानी, महागुणी, हिम्मतवर, करता है हर वक्त कमाल॥ 4॥
वेदों का विद्वान् निराला, शास्त्रार्थ करता निर्भीक।
मुल्ला, पोप, पुजारी-पण्डे, जिसने किए हजारों ठीक।
जिसने पांच बार सम्मानित, किए सुनो वैदिक विद्वान्।
वेद-प्रचार कराता विक्रम, बढ़-चढ़ कर देता है दान॥ 5॥
भजनोपदेशक परिषद् बनवा, करके किया निराला काम।
सब विद्वानों के हृदय पर, अंकित है विक्रम का नाम।
अब तक किसी धनी मानी ने, विक्रम जैसा किया न काज।
विक्रम सिंह सच्चा विक्रम है, मान रहा है आर्य समाज॥ 6॥
सुनो, जगत भर के धनवानो! तुम भी सीखो करना दान।
याद रखो, सौ गुणा तुम्हें धन, देगा न्यायकारी भगवान्।
करो सार्थक जीवन अपना, नादानो! दो लालच छोड़।
जगत्पिता उस जगदीश्वर से, अपना लो अब नाता जोड़॥ 7॥
ईश्वर से मेरी विनती है, दया करो हे जगदाधार।
शतायु जीवन दो विक्रम को, सुखी रहे विक्रम परिवार।
धन- नत भरपूर दीजिए, करते रहें सदा सब दान।
'**नन्दलाल**' भामाशाह बनकर, पाएं जगती में सम्मान॥ 8॥

—पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक, आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

विद्यालय में धूमधाम से मनाया गया 75वां स्वतन्त्रता दिवस अमृत-महोत्सव

आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, वीर भवन, पानीपत में दिनांक 15 अगस्त 2022 को आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर समारोह का आयोजन किया गया शुभारंभ विद्यालय में उपस्थित मुख्य अतिथि श्री विजय जैन (समाज सेवी) जी द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। जैसे ही तिरंगा हवा में फहराया पूरा वातावरण जन-गण-मन की ध्वनि से गुंजायमान हो उठा। विद्यालय की प्रबन्ध समिति ने विद्यालय में आए अतिथियों का विद्यालय में पधारने पर स्वागत व आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद किया। इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी के मन में देशभक्ति के जज्बे को जगा दिया। छात्राओं ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ विषय पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत की जो कि बहुत ही सराहनीय रही। इसके अतिरिक्त शहीद होने वाले जवानों के परिवार की देश के प्रति समर्पण भावना को दर्शाते हुए एक लघु नाटिका ने सभी के मन को भावुक कर दिया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने आजादी के लिए बलिदान देने वाले षहीदों को याद करते हुए छात्राओं को उनके द्वारा बनाए गए पथ पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि शहीदों द्वारा प्राप्त की गई आजादी को संजोकर रखना आज की युवापीढ़ी की ही जिम्मेवारी है। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती स्वीटी छिक्कारा ने छात्राओं को देश से भ्रष्टाचार रूपी दीमक जो कि देश को खोखला कर रही है उसे समाप्त करने के लिए तथा देश को एकता और अखंडता के सूत्र में बांधे रखने के लिए प्रेरित किया। समारोह के बाद सभी के लिए प्रसाद के साथ प्रीति भोज का भी प्रबन्ध किया गया। मंच संचालन श्रीमती संगीता रोहिला जी ने किया।

इस अवसर पर श्री अतुल गुप्ता, श्री रामपाल जागलान (एस.डी.ओ.), श्री सत्य नारायण, श्री कर्णसिंह पसीना, श्री सुरेश कंसल, श्री पूर्णचन्द विद्यालय की प्रबन्ध समिति तथा समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। —प्रधानाचाया

शोक-समाचार

वेदप्रचार मण्डल रोहतक के प्रधान श्री सुभाष आर्य की माता श्रीमती चन्द्रवती आर्या का 95 वर्ष की आयु में 8 अगस्त 2022 को स्वर्गवास हो गया। आपका जन्म प्रसिद्ध आर्यसमाजी म० छाजूराम गांव निडानी के घर पर हुआ। आपकी शिक्षा बिड़ला विद्या मन्दिर पिलानी से हुई। आपने आस-पास के क्षेत्र में कई पाठशालाएँ खोलीं तथा शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया। आप महर्षि दयानन्द की अनन्य भक्त रही। आप दैनिक हवन भी करती रहीं।

14 अगस्त 2022 को आपकी श्रद्धांजलि सभा आर्यसमाज मन्दिर मॉडल टाउन रोहतक में हुई। गुरुकुल रुड़की से आचार्या बहन सुकामा जी व गुरुकुल लाढौत से आचार्य हरिदत्त तथा सैकड़ों महानुभावों एवं महिलाओं ने भाग लिया। मंच का संचालन डॉ० जगदेवसिंह विद्यालंकार ने किया।

परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति देवे एवं व्यथित परिवार को इस विकट दुःख को सहन करने की शक्ति देवे।

—सत्यवान आर्य, सह-कार्यालयाधीक्षक

निर्वाचन

आर्यसमाज नांगल चौधरी जिला महेन्द्रगढ़

संरक्षक-श्री राधेश्याम, श्री दयाराम, वैद्य नन्दाराम, श्री राजेन्द्र, श्री दलीपसिंह, प्रधान-श्री उमेद सिंह 'निराला', उपप्रधान-श्री वीरेन्द्र सिंह, मंत्री-श्री जयवीर सिंह, उपमंत्री-श्री मनोज, कोषाध्यक्ष-श्री राजेन्द्र प्रसाद, सह-कोषाध्यक्ष-श्री रामपत शर्मा, संगठन मंत्री-श्री धर्मवीर, पुस्तकाध्यक्ष-श्री कर्णसिंह।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार-पत्र की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये। सम्पर्क-मो० 08901387993

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया स्वतन्त्रता दिवस

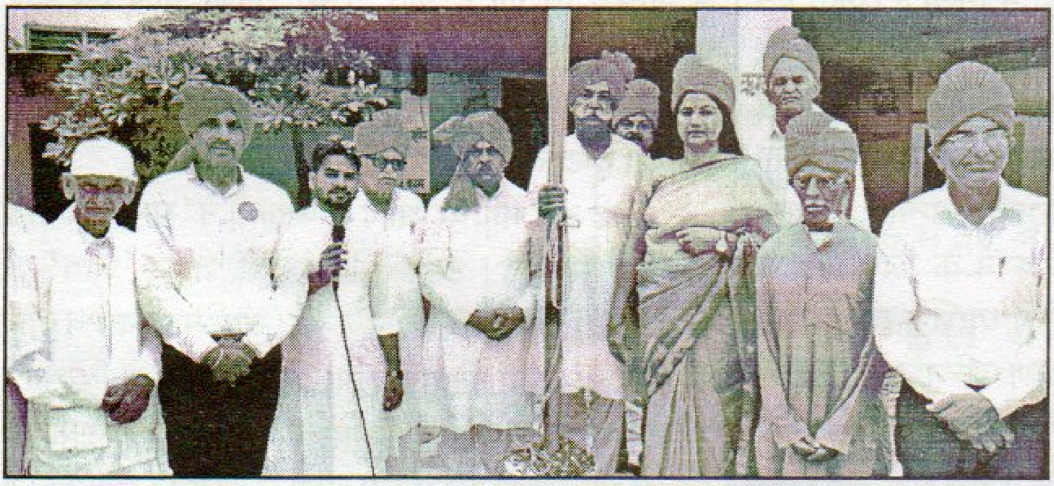

आर्यसमाज सिरसा के प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस व स्वाधीनता के 75वें अमृत महोत्सव पर हर्षोल्लास के साथ तिरंगा झण्डा फहराया गया। तत्पश्चात् राजकुमार शास्त्री ने ऋग्वेद से संकलित राष्ट्रीय प्रार्थना गायन किया। आर्यसमाज के प्रधान पद को अलंकृत कर रहे अशोक वर्मा ने सभी वीर शहीदों को हृदय से नमन किया और कहा कि आज अति हर्ष का दिन है कि 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश शासन से मुक्त हुए। वर्तमान में भी छुआछूत दृष्टिगोचर हो रहा है जिसके लिए महर्षि दयानन्द जी ने पुरजोर खण्डन किया, आज भी आर्यसमाज को जातिवाद व छुआछूत को जड़ से खत्म करने के लिए प्रयास करना चाहिए। दो दिन पहले की घटना 6 वर्ष के बालक मटका से पानी पी लेने पर, हेडमास्टर ने प्राण ले लिया। इस घटना की कड़ी निंदा की गई। सरकार से हेडमास्टर को फांसी हेतु मांग किया पुनः कहा किसी की अधीनता में जीना कितना मुश्किल होता है आप कल्पना कर सकते है, जिस उम्र में आज के युवा पीढ़ी नशे में लिप्त रहते हैं उस उम्र के क्रातिकारियों ने देश पर शहीद होकर अंग्रेजों के दासता से आजाद करवाया। अंग्रेजों के गुलामी से हम आज भी मुक्त न होते अगर महर्षि दयानंद सरस्वती भारत के पावन धरा पर न आते, क्योंकि महर्षि दयानंद सरस्वती से ही प्रेरणा लेकर भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाषचंद्र बोस आदि देश को स्वतंत्रता दिलाने में पूर्णरूप से समर्पित हुए। विमला सिंवर ने कहा हमें साथ मिलकर चलने की जरूरत है तभी हम देश को उत्थान कर सकते हैं। आर्यसमाज के संरक्षक जगदीश सिंवर शेखूपुरिया ने कहा कि स्वतंत्रता से अभिप्राय है आजाद अर्थात् किसी के अधीन न रहना। आज ही के दिन 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजी शासन से मुक्त हुआ। इसलिए राष्ट्रीय पर्व के रूप में प्रतिवर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं, देश की आजादी में आर्यसमाजियों की 85% भूमिका रही। स्वामी श्रद्धानन्द, पण्डित लेखराम, लाला लाजपतराय आदि स्वतंत्रता संग्राम में अग्रिम पंक्ति में रहकर अग्रेजों से जंग किया और गुलामी की जंजीरों से मुक्ति दिलाया। इस अवसर पर रामप्रताप (पूर्व सरपंच), चन्द्रपाल योगी, शमशेर सिंह, पारस आर्य, भूपसिंह गहलोत, चन्द्रमुनि, दीपक, सुभाष वर्मा, मुनीश, विजय जोशी, कर्मवीर, वेदप्रकाश सरदाना, प्रेम शर्मा, चन्द्रभान, ओमप्रकाश आदि उपस्थित रहे।

प्रेरक वचन

- दु:खों के कारणों की समझ ही दु:ख का इलाज है।
- जो आप आज और अभी कर रहे हैं, उसे सर्वश्रेष्ठ करो।
- ज्ञान के अभाव में जोश प्रकाश रहित अग्नि के समान है।
- सुधार की शुरुआत स्वयं से करनी चाहिए।
- निरन्तर संघर्ष का नाम ही जीवन है।
- विचारों के परिवर्तन से ही क्रान्ति का शुभारंम्भ होता है।
- अपना अहंकार त्यागकर ही व्यक्ति सच्चा मानव बनता है।
- योग वह विज्ञान है जो हमें चित्त की परिवर्तनशील अवस्था से विरुद्ध कर उसे वश में करने की शिक्षा देता है।

संकलन—भलेराम आर्य, गांव सांघी, जिला रोहतक, मो० 9416972879

आर्यसमाज की दृष्टि में...पृष्ठ 5 का शेष...

है। महर्षि का यह गुण हमें विरासत में मिला है। अत: हम श्रीकृष्ण जी के वास्तविक स्वरूप को समझें। जिस प्रकार श्रीकृष्ण जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सत्य, धर्म और न्याय की स्थापना में व्यतीत कर दिया, उसी प्रकार हम भी अपने चारों ओर फैले हुए अज्ञान, अभाव, अन्याय, अधर्म, आतंकवाद, भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए श्रीकृष्ण जी के गुणों और नीतियों को जीवन में धारण करके वैसा ही आचारण करें, तभी हमारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाना सार्थक होगा।

अद्वितीय महापुरुष योगेश्वर...पृष्ठ 7 का शेष...

पूरे विश्व में कहीं देखने को नहीं मिला। वर्तमान में हमारा एक पड़ोसी देश हमारे कुछ अन्य शत्रुओं के साथ मिलकर विश्वविजयी बनने सहित अपने देश की सीमाओं का विस्तार करने की बातें कर रहा है। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने उस पड़ोसी देश को ऐसा करारा उत्तर दिया है जो इससे पूर्व के किसी प्रधानमंत्री द्वारा नहीं दिया गया। योग्य नेता के नेतृत्व में ही देश उन्नति करता, सशक्त होता व अखण्डित रहता है। यह बात आज हम प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व को देखकर कह रहे हैं। ईश्वर करे कि हमारा देश श्रीराम व श्रीकृष्ण सहित वेद, आचार्य चाणक्य तथा ऋषि दयानन्द जी की शिक्षाओं के आधार पर आगे बढ़े। इसी में वैदिक धर्म एवं देश का गौरव एवं रक्षा सम्भव है।

महर्षि दयानन्द ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में श्रीकृष्ण जी के गुणों व चरित्र की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। श्रीकृष्ण जी के महाभारत में उपलब्ध सत्य इतिहास पर आधारित अनेक आर्य विद्वानों के लिखे जीवन चरित्र मिलते हैं जिनमें पं० चमूपित, डॉ० भवानीलाल भारतीय, लाला लालजपत राय आदि प्रमुख हैं। स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा सम्पादित महाभारत एवं पं० सन्तराम जी द्वारा प्रणीत संक्षिप्त महाभारत भी अत्यन्त सराहनीय एवं पठनीय ग्रन्थ है। अन्य अनेक विद्वानों के ग्रन्थ भी पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। इन ग्रन्थों का अध्ययन करके सभी पाठकों को लाभ उठाना चाहिये। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर सभी मित्रों को हार्दिक शुभकामनायें एवं बधाई।

वेद-प्रवचन.....पृष्ठ 3 का शेष....

से अधिक मिलती है वही अच्छी समझी जाती है। जैसा करो, वैसा भरो। जितना करो, उतना भरो। इसी को 'याथातथ्यता' कहते हैं। परमात्मा की सृष्टि 'याथातथ्यता' का पूरा दृष्टान्त है।

उवट और महीधर आदि भाष्यकारों ने 'समा' का अर्थ संवत्सर लिया है। उनके मस्तिष्क में शायद 'जीव' के नित्यत्व की भावना विद्यमान न थी। जीव का नित्यत्व और वैदिक त्रैतवाद तो आधुनिक आचार्यों के ग्रन्थों में विस्मृत-सा हो गया प्रतीत होता है, इसमें अधिकतर शांकर मायावाद की ही प्रतिच्छाया दृष्टिगोचर होती है। इसका स्पष्टीकरण तो ऋषि दयानन्द ने ही किया है, इसकी पुष्टि इस वेदमन्त्र से होती है। समस्त जीव-जगत् प्रभु की प्रजा है। शाश्वती प्रजा जो ईश्वर की सत्ता के समान ही नित्य है और उसी प्रजा (प्रजाओं-बहुवचन) के लिए तो यह सृष्टि रचना हुई है। यदि जी-जैसी चेतन और नित्य सत्ताएँ न होती तो शुद्ध तथा अपापविद्ध परमात्मा में कौन-सी त्रुटि अथवा आवश्यकता थी कि इस प्रपंच को रचता?

उवट आदि आचार्यों को समा का संवत्सर अर्थ लेना अखरा तो अवश्य, क्योंकि व्याख्या करने में उनको खींचातानी करनी पड़ी।

उवट आचार्य लिखते हैं—'**शाश्वतीभ्योऽनन्ताभ्य: समाभ्योऽर्थाय अनन्तवर्षप्राप्तये च कर्म कृतवान्।**'

महीधर आचार्य का कथन है—'**शाश्वतीभ्यो नित्याभ्य: समाभ्य: संवत्सराख्येभ्य: प्रजापतिभ्यो याथातथ्यत: यथाभूतकर्मफलसाधनत: अर्थान् कर्त्तव्यपदार्थान् व्यदधात्।**'

संवत्सर या वर्ष तो कर्मफल के भागी नहीं बनते। 'प्रजापति' शब्द से भी गुत्थी खुलती नहीं और उलझ जाती है, इसलिए 'शाश्वतीभ्य: समाभ्य: ' का सीधा विस्पष्ट अर्थ 'नित्यजीव' ही है।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

यज्ञ हेतु दान देकर पुण्य के भागी बनें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ किया जाता है और पर्यावरण शुद्धि के लिए रोहतक जिले के सरकारी, गैर सरकारी विद्यालयों और गांव-गांव में यज्ञ व वेद प्रचार का आयोजन किया जाता है। इस महायज्ञ में आप लोग अपने बच्चों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व अन्य उपलक्ष्यों पर दान देकर पुण्य के भागी बनें। संस्था सदैव आपकी आभारी रहेगी।

यज्ञदान हेतु बैंक खाता

ACCOUNT NAME - ARYA PRATINIDHI SABHA HARYANA
BANK NAME - PNB JHAJJAR ROAD ROHTAK
Account No. - 0406000100426205
IFSC - PUNB0040600
MICR - 124024002

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ..
पता ....
....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा